साक्षात्कार

बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं वरिष्ठ साहित्यकार प्रो० सत्यपाल श्रीवत्स जी से विदूषी श्रीमती नीरू शर्मा की बातचीत

❑ नीरू शर्मा

सौम्य-सरल स्वभाव, मृदुभाषी-कर्मनिष्ठ डोगरी, हिन्दी, अंग्रेज़ी एवं संस्कृत के विद्वान बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रो० सत्यपाल श्रीवत्स का जन्म जम्मू-कश्मीर राज्य के कठुआ जिला के सुराड़ी गांव के कुलीन ब्राह्मण परिवार में 11 जून 1932 में हुआ। इन्होंने जम्मू कश्मीर, पंजाब, कुरुश्रेत्र तथा पूना विश्वविद्यालय से क्रमशः शास्त्री प्रभाकर, एम.ए, पी. एच. डी. तथा भाषा विज्ञान में उपाधियां प्राप्त की। प्रो० सत्यपाल श्री वत्स हिंदी-डोगरी के कवि, कहानीकार समालोचक, अनुवादक नाटककार हैं इन्होंने संस्कृत में भी नाटक लिखे हैं, जिनमें से कुछ रेडियो जम्मू द्वारा प्रसारित भी हुए हैं। साहित्य साधक एवं भारतीय दार्शनिक परंपरा के मननकर्ता एवं उच्च मान-मूल्यों के स्वामी प्रो० सत्यपाल श्रीवत्स जी के साथ बातचीत :

1. **नीरू शर्मा :** प्रो. श्रीवत्स जी आपने कब और किन परिस्थितियों में लेखन कार्य प्रारंभ किया ?

   प्रो. श्रीवत्स : नीरू जी, लिखने एवं पढ़ने की प्रेरणा मुझे परिवार से ही मिली, मैं इसका श्रेय अपनी दादी माँ श्रीमती अन्नपूर्णा देवी जी को दूंगा जो बचपन से ही मुझे संस्कृत श्लोक सिखाती थीं। उन्हीं से मैंने सूर्य प्रार्थना, चंद्र प्रार्थना, धरती पर पांव रखने से पूर्व बोला जाने वाला श्लोक, सत्य नारायण जी का एक अध्याय बचपन में ही सीख लिया था। तभी से मेरा झुकाव पढ़ने की ओर हो गया था।

2. **नीरू शर्मा :** प्रो० साहब आपने किस से प्रभावित होकर लिखना प्रांरभ किया ? क्या आपके परिवार की पृष्ठ भूमि में कोई साहित्य सृजक अथवा साहित्य प्रेमी था ?

   प्रो० श्रीवत्स : जी हाँ मेरे ताया जिनका नाम चंदुलाल शर्मा था, उनका रुझान लेखन की ओर था। उनके द्वारा लिखी एक पांडुलिपि भी थी। हमारे घर का वातावरण धार्मिक था।

558/3 सैक्टर सी सैनिक कालोनी, जम्मू।

3. **नीरू शर्मा :** एक सृजनशील साहित्यकार के नाते सृजन के विषय में आपके मौलिक विचार क्या हैं ?

प्रो० श्रीवत्स : सृजन के लिए अंत: प्रेरणा, वातावरण एवं परिवेश तीनों का सामंजस्य अति आवश्यक है। पर भीतर संवेदना होना भी उतना ही जरूरी है। मैं इसे स्वत: स्फूर्त प्रवाह मानता हूँ। बाह्य परिवेश की अनुभूति संवेदना को जब तक न झकझोरे सृजन नहीं होता।

वियोगी होगा पहला कवि
आह से निकला होगा गान
फूट कर आंखों से निकली
होगी कविता अनजान।

विख्यात कवि सुमित्रानंदन पंत की ये पंक्तियां मेरे कथन की पुष्टि करती हैं।

4. **नीरू शर्मा :** प्रो० साहब आप की प्रथम प्रकाशित कृति कौन सी है ?

प्रो० श्रीवत्स : मेरा छुटपुट लेखन स्थापित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होता रहा। पहला कविता संग्रह 'मीठे बोल-तीखे स्वर' नाम से सन 1988-89 में प्रकाशित हुआ। इसका विमोचन राज भवन में माननीय राज्यपाल श्री जगमोहन जी के करकमलों द्वारा हुआ।

5. **नीरू शर्मा :** आप अपनी प्रकाशित कृतियों के विषय में विस्तार-पूर्वक जानकारी देंगें ?

प्रो० श्रीवत्स हिन्दी में :

1. विचार और विश्लेषण (साहित्यिक)
2. परख और मूल्यांकन-2015
3. भारतीय संस्कृति के विविध आयाम-2016

डोगरी में

1. सोच सिरजना (निबंध संग्रह) 2005
2. बोल ते तोल (समीक्षात्मक) 2013
3. समीक्षा दे झरोखे च (प्रैस च)

1. श्याम लाल शर्मा (मोनोग्राफ) जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति एवं भाषा अकैडमी द्वारा प्रदत्त कार्य (प्रैस में)।

2. प्रो० शक्ति शर्मा (मोनोग्राफ) साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा प्रदत्त कार्य (प्रैस में)

अंग्रेजी में :

1. ..... Glimpses of our cultural heritage : 2006.
2. Fellow Ship Folk Dances of Jammu region, 2015
3. Ravanarjuniyam a critical study with special ref to socio-economic condition of Kashmir (in Press)

नीरू शर्मा : सर, आप ने अनुवाद कार्य भी किया है। किस भाषा से किस भाषा में ?

प्रो० श्रीवत्स : नीरू जी अनुवाद डोगरी से हिंदी, हिंदी से डोगरी, अंग्रेज़ी से हिंदी कुछेक यूं हैं।

अनुवाद :

1. शेक्सपीयर के नाटक मैकवथ का डोगरी में - 1969
2. कथा सरित सागर के चतुर्थ भाग का संस्कृत से डोगरी में
3. त्रिप-त्रिप चेत्ते : ओम विद्यार्थी की डोगरी कृति का हिंदी में 'बंदू-बूंद स्मृतियां'
4. जान पाल सात्रे की (अंग्रेज़ी रचना Word का डोगरी में अनुवाद आदि।
5. तारीख-ए-हिन्द उर्दू से हिन्दी अनुवाद

7. **नीरू शर्मा :** सर, आपने गद्य और पद्य दोनों विधाओं में लिखा है। फिर भी कौन-सी विधा आपको सहज और मनभावन लगी ?

प्रो० श्रीवत्स : वैसे तो दोनों विधाएं मुझे प्रिय हैं। परंतु गद्य को मैं प्राथमिकता देता हूँ। देखा जाए तो गद्य ही कवि एवं लेखक की पहचान की कसौटी होता है।

8. **नीरू शर्मा :-** लेखन के विषय में अपने कुछ अनुभव सांझा करें। या यूं कहें कि मानस से कागज़ तक कि प्रक्रिया के विषय में बतायें ?

श्रीवत्स : नीरू जी, बहुत ही सुंदर प्रश्न किया आपने। वास्तव में देखा जाए तो लेखन कवि एवं लेखक की अपनी-अपनी अनुभूति का स्वतंत्र परिणाम होता है। जितनी प्रबल संवेदना होगी उतना ही सुंदर लेखन उससे जन्म लेगा।

जब अनुभूतिजन्य संवेदना हृदय पटल पर दस्तक देती है तो लेखक स्वत: ही सुंदर एवं अलंकृत शब्दों के माध्यम से कागज़ पर एक नयी रचना को उतार देता है। आप स्वयं हिंदी-डोगरी की लेखिका हैं, मेरी इस बात को भली-भांति समझ सकती हैं।

9. **नीरू शर्मा :** प्रो० साहब लेखन एक सामाजिक दायित्व है, आप बताएं कि क्या लेखक का कुछ भी निजी नहीं होता ?

प्रो० श्रीवत्स : नीरू जी, मैं मानता हूं कि लेखन एक सामाजिक दायित्व है पर लेखक का व्यक्तित्व हरेक रचना में प्रतिबिंबित होता है। उसका निजीपन अवश्य होता है।

10. **नीरू शर्मा :** सर, क्या आपको कभी लेखन के कारण व्यक्तिगत जीवन में संघर्ष का सामना करना पड़ा ? कोई अविस्मरणीय घटना ?

प्रो० श्रीवत्स : हाँ, छोटा-मोटा चलता रहता है। मेरा मानना है कि जब तक लेखक को संघर्ष न करना पड़े उसे प्रेरणा नहीं मिलती।

11. **नीरू शर्मा :** प्रो० साहब आपने नाटक भी लिखे हैं। आपको नाटक लिखने की प्रेरणा अपने इर्द-गिर्द के परिवेश की चुनौतियों से मिलती है या समीक्षा, समालोचना कहानी, कविता, आदि लिखते-लिखते अपने अनुभव एवं चिंतन को पूरी तरह से अभिव्यक्त करने की इच्छा इस विधा से जोड़ती है ?

प्रो० श्रीवत्स : नीरू जी साहित्यकार समय की चुनौतियों का सामना करता है तभी तो उसकी लेखनी कालजयी होती है। मेरी नियुक्ति 1962 में जब प्राध्यापक के रूप में पुंछ में हुई तो उन दिनों कालेज के प्राचार्य प्रो० पृथ्वीनाथ पुष्प जो संस्कृत एवं हिन्दी के प्रकांड पंडित थे, उनकी साहित्यिक अभिरुचि बड़ी प्रशस्य एवं प्रेरणादायक थी। इसलिए उनसे ही मुझे भी लेखन के प्रति उत्साह मिलने लगा। यद्यपि मैं पहले छुटपुट कविताएं और लेख आदि हिंदी एवं डोगरी में लिखता था। 1965 में जब भारत एवं पाकिस्तान का युद्ध प्रारंभ हुआ। तत्कालीन माननीय प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी आकाशवाणी के माध्यम से हर तीसरे दिन लोगों एवं सैनिकों को अनेक प्रकार से उत्साहित करते थे। उन्हीं दिनों 'रक्तदान' एवं 'विजय हमारी' दो हिंदी एकांकी लिखे थे। ग्रीष्मावकाश के दिनों जब गांव चला आया तो अपने गांव के परिवेश से प्रेरित होकर एक डोगरी नाटक "भाग कियां जागदे" लिखने की प्रेरणा मिली। यह नाटक उन दिनों डुग्गर में प्रचलित दोहरी प्रथा पर आधारित है।

11. **नीरू शर्मा :** प्रो० साहब आपकी रचनाओं में समाज का यथार्थ किस रूप में आता है? आपके विचार से वैचारिकता के साथ यथार्थ का सामंजस्य लेखन में किस रूप में प्रस्तुत होता है ?

प्रो० श्रीवत्स : नीरू जी समाज के घटित होने वाली घटनाओं से एक सच्चे रचना -धर्मी के हृदय में उथल पुथल होती है जिससे अनुभूति जन्य संवेदनाएं जागृत होती

हैं जो उसे लिखने को विवश कर देती हैं। मेरा पहला कविता संग्रह "मीठे बोल, तीखे स्वर" से इस बात की पुष्टि होती है। मेरा मानना है कि लेखक के शब्द मीठे होने चाहिए पर भाव तीखे जो समाज पर चोट करें। मेरी कविता के माध्यम से यथार्थ रूप में उस समाज को कुछ प्रदान करने का भाव है। दूसरा पक्ष समालोचना का है उस दृष्टि से जब मैं किसी रचना की समालोचना करता हूँ तो यदि उस में कोई निम्न स्तरीय भाव हो तो मैं उस पर तीखा प्रहार करने से नहीं चूकता। चाहे लेखक को मेरी आलोचना बुरी लगे, पर इससे साहित्य का स्तर उच्च होता है।

तीसरा पक्ष निबंधकार का है। मेरा निबंध संग्रह 'सोच-सिर्जना' नाम से 2013 में प्रकाशित हुआ है। इसमें पांच मनोवैज्ञानिक निबंध है और विविध विषयों पर आधारित हैं। उनमें हास्य व्यंग्य के दो निबंध है जिन्हें काफी सराहा गया है। उनके शीर्षक यूं है- अंकल संस्कृति के कारनामे, लफाफा संस्कृति दे चमत्कार डोगरी में।

13. **नीरू शर्मा :** प्रो० साहब आप लंबे समय से लेखन में सक्रिय है और हिंदी, डोगरी, संस्कृत एवं अंग्रेज़ी आदि भाषाओं में लिखते हैं। क्या आप अपने लेखन से संतुष्ट हैं ?

प्रो० श्रीवत्स : नीरू जी मुझे मेरे गुरु पं० काबता राम शास्त्री जी द्वारा यह शिक्षा प्राप्त हुई है कि "यावत् जिवेत तावत् अधियेत्" यानि जब तक जीना है, तब तक यह साधना करते रहना है। मैं आज भी अध्ययन एवं लेखन में यथा संभव व्यस्त रहता हूँ और पूर्णतया संतुष्ट हूँ।

14. **नीरू शर्मा :** प्रो० साहब साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन भी होता है, फिर साहित्य में वैचारिकता का कितना महत्व हो सकता है ?

प्रो० श्रीवत्स : नीरू जी आप का यह प्रश्न बहुत अच्छा है। यह ठीक है कि साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन होता है, पर तब तक वह सार्थक नहीं होता जब तक समाज को कोई संदेश न दे।

15. **नीरू शर्मा :** प्रो० श्रीवत्स जी क्या आप रचनाकार के लिए वैचारिक प्रतिबद्धता का होना जरूरी मानते हैं ? यदि हाँ तो क्यों ?

प्रो० श्रीवत्स : आज के संदर्भ में बड़ा ही सटीक प्रश्न है। रचनाकार में वैचारिकता तो होती ही है परंतु मात्र खोखली वैचारिकता समाज के किसी काम की नहीं होती। वास्तव में रचना वही होती है जो आत्म पर्क (Subjective) न हो कर वास्तु पर्क (Objective) हो। क्योंकि वास्तुपर्क रचना ही कालजयी बनने के योग्य होती है।

16. **नीरू शर्मा :** श्रीवत्स जी आप भारत की प्राय: सभी स्तरीय पत्रिकाओं में छपते रहे हैं और छप रहे हैं। कृपया बताएं साहित्य में जो विचारधारा की बात होती है। इन

दोनों यानि साहित्य और विचारधारा पर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी ?

प्रो० श्रीवत्स : नीरू जी वर्तमान युग वैश्वीकरण के दौर से गुज़र रहा है। विश्व एक गांव में परिवर्तित होता हुआ प्रतीत हो रहा है। वर्तमान में उग्रवाद की समस्या से जहाँ विश्व के अनेक देश जूझ रहे हैं, वही भारत भी उनमें से एक है। भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती, बलात्कार आदि से उत्पन्न कुंठा एवं घुटन से प्राय: साहित्यकार प्रभावित होकर इन समस्याओं पर अपनी लेखनी चला रहा हैं। परंतु ऐसी अवस्था में भी नारी विमर्श की समस्या उभर कर सामने आई है। तदानुकूल साहित्य के माध्यम से समाज में भी जागरूकता आ रही है। उससे पारिवारिक जीवन एवं समाज पर सुखद प्रभाव पड़ने की पूर्ण संभावना है।

17. **नीरू शर्मा :** प्रो० साहब क्या साहित्यकार के लिए एक दायरे तक सीमित रहना जरूरी है ?

प्रो० श्रीवत्स : मेरा यह मानना है कि एक प्रबुद्ध साहित्यकार कोल्हू का बैल नहीं होता है कि वह मात्र धुरी पर ही घूमता रहे। उसका विजन (Vision) सार्व-कालिक एवं सार्वभौम होना चाहिए। इससे स्वत: ही सिद्ध हो जाता है कि साहित्यकार का बौद्धिक आयाम असीम होता है। उसका दृष्टिकोण आज के युग में प्रगतिवादी होना आवश्यक है। पर साम्यवाद वाला प्रगतिवाद नहीं, अपितु, भारतीय संस्कृति की परंपरा के अनुरूप होना चाहिए। जिसकी परिभाषा यह है- जीवन के प्रति जागरूक भावना प्रगति है और परिस्थितियों को यथार्थ ज्ञान से अपना लक्ष्य निर्धारित करना प्रगतिवाद है।

18. **नीरू शर्मा :** प्रो० साहब मीडिया का प्रचार-प्रसार बढ़ने से साहित्य पर क्या, कैसा, और कितना प्रभाव पड़ रहा है ? क्या इससे साहित्य के प्रति पाठकों का रुझान कम हुआ है ?

प्रो० श्रीवत्स : नीरू जी आज के संदर्भ में इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में Print media से इतनी हानि नहीं हुई जितनी Electronic media से इसके साथ-साथ प्रसार-भारती एवं दूरदर्शन भी इस विपरीत स्थिति से निपटने के लिए सजग हैं। परंतु फिर भी Electronic media से जो हानि हो रही है, उस पर किसी सीमा तक अंकुश लगाने की नितांत जरूरत है। अन्यथा आने वाली पीढ़ी पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा।

19. **नीरू शर्मा :** प्रो० साहब क्या आपको महसूस नहीं होता कि आज का साहित्य बाज़ारवाद का हिस्सा बन रहा है ?

प्रो० श्रीवत्स : आपका यह प्रश्न और भी कई नए प्रश्न मन में जागृत करता

है। जिनें हम डा० राम कुमार वर्मा के शब्दों में यूं कह सकते हैं कि प्रश्न के चिह्न बिच्छू के डंक की तरह टेढ़े होते हैं। अत: कई प्रश्न किए जाते हैं और कई के उत्तर स्वत: उभरते हैं। आपने जो बात कही इस संदर्भ में इसी प्रकार के प्रश्न उभरते हैं। यह तो साहित्यकार के वश में उतना नहीं जितना सरकारी तंत्र के हाथ में हैं।

20. **नीरू शर्मा :** प्रो० साहब क्या साहित्य का उद्देश्य मानसिक विकृतियों और अश्लीलता को पाठकों के समक्ष परोसना है ? क्योंकि ऐसा साहित्य चर्चा में रहता है। आप इस विषय पर क्या कहना चाहेंगे ?

प्रो० श्रीवत्स : नीरू जी मैं इस से बिल्कुल सहमत नहीं हूँ। ऐसा साहित्य चाहे चर्चित हो, पर कालजयी कदापि नहीं होता। साहित्यकार का कर्त्तव्य होता है कि वह समृद्ध साहित्य और अपनी सांस्कृतिक विरासत को अपनी लेखनी के माध्यम से आने वाली पीढ़ी तक पहुंचाए न कि साहित्य के नाम पर अश्लीलता परोसे।

21. **नीरू शर्मा :** प्रो० साहब वर्तमान कहानी का जो स्वरूप है क्या आप उससे संतुष्ट हैं ? क्योंकि आप स्वयं भी कहानीकार हैं। डोगरी में लिखी आपकी कुछेक कहानियां चर्चित रही हैं।

प्रो० श्रीवत्स : नीरू जी आज कहानी ने भी करवट बदली है। आज के कहानीकार समसामयिक समस्याओं पर कहानियां बुन रहे हैं। आज हिंदी और डोगरी दोनों भाषाओं में उत्तम कोटि की कहानियां लिखी जा रही हैं। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि आज संवेदनाओं से परिपूर्ण बड़ी ही सशक्त कहानियां रची जा रही हैं। कहानी का भविष्य मुझे उज्जवल दिखाई दे रहा है।

मेरी डोगरी की कहानियां 'चनाऽ ग्रांऽ सुंदरी दा', 'गुरूमंत्र', 'चिट्ठी रसान' एंव हिंदी की सोनार बंगला चर्चित रही है।'

22. **नीरू शर्मा :** प्रो श्रीवत्स जी आज साहित्य का जो मूल्यांकन हुआ है, या हो रहा है, क्या आप उससे सुंतष्ट हैं ?

प्रो० श्रीवत्स : नीरू जी, आप का यह प्रश्न तो झकझोरने वाला है। आज साहित्य का जो समालोचना की कसौटी पर मूल्यांकन हो रहा है, उससे प्रत्यक्ष रूप से पक्षपात की गंध आती है। इससे भाषा विशेष को तो हानि होती ही है, पर उस से भाषा भाषियों को भी हानि पहुंचती है। इस विषय में कुछ और भी अपना मन्तव्य जोड़ना चाहता हूँ। वह यह कि आज मान-सम्मान प्राप्त करने के लिए जबरदस्त होड़ लगी हुई है। परिणामत: स्तरीय लेखक की रचना उपेक्षित हो जाती है और निम्न की पुरस्कृत।

23. नीरू शर्मा : प्रो० साहब साहित्य सृजन के प्रवाह में वृद्धि हुई है। आपके विचार से पाठकों को साहित्य के साथ कैसे जोड़ा जाए ताकि उनमें साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न हो ?

प्रो० श्रीवत्स : बहुत ही बढ़िया प्रश्न किया आपने नीरू जी। आज पाठक की समस्या प्रायः सभी भाषाओं में है। डोगरी में हम देख रहे हैं कि साहित्य तेजी से लिखा जा रहा है, पर पाठक नाम मात्र है। हमारी पड़ोसी पंजाबी भाषा में शायद यह समस्या कम है क्योंकि पंजाबी अपनी भाषा को गुरवाणी कहते हैं और उसे पढ़ते हैं। हिंदी का क्षेत्र बड़ा विशाल है। फिर भी यह समस्या वहाँ भी है। पाठकों को साहित्य से जोड़ने के लिए बहुत जरूरी है कि किताबों पर परिचर्चाएं रखी जाएं। युवावर्ग को उन परिचर्चाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें। पुस्तकों पर बड़ी सटीक समीक्षा की जाए, जिससे युवावर्ग में उस पुस्तक को पढ़ने की जिज्ञासा उत्पन्न हो।

24. नीरू शर्मा : प्रो० साहब आप बहुत सी साहित्यिक संस्थाओं के साथ जुड़े हुए हैं। क्या ये संस्थाएं पाठकों एवं लेखकों के मध्य सेतु का काम कर उन्हें जोड़ने का कार्य कर सकती हैं। इस विषय में आप का क्या विचार है ?

प्रो० श्रीवत्स : जी हां, मैं हरि प्रभु संस्था- नंगरोटा गुजरू बिलावर का संरक्षक, अखिल भारतीय भाषा विज्ञान समिति पूना के जम्मू अध्याय का प्रधान, डोगरी कोआपरेटिव राइटर्स सोसाइटी का प्रधान, विश्व संस्कृत प्रतिष्ठानम जम्मू का उपप्रधान, डोगरी रिसर्च इन्स्टीच्यूट जम्मू का उपप्रधान, जम्मू-कश्मीर राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति (वर्धा) का संचालक हूँ। मेरा मानना है कि संस्थाएं पाठकों को साहित्य के साथ जोड़ने में एक अहम् भूमिका निभाती हैं। राष्ट्र भाषा प्रचार समिति की ओर से साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाते हैं। उनमें नए बच्चों को मंच उपलब्ध कराया जाता है जिससे उनमें साहित्य प्रेम धीरे-धीरे पनपने लगता है। नीरू जी आप राष्ट्र भाषा प्रचार समिति की प्रधान होने के नाते जानती ही हैं कि राष्ट्र भाषा प्रचार समिति की पूरी टीम नवलेखकों को अपने साथ जोड़ने का सराहनीय कार्य कर रही है। नवयुवक भी पूरे उत्साह के साथ संस्था के साथ जुड़े हुए हैं।

25. नीरू शर्मा : प्रों० साहब आप को बहुत से मान-सम्मान भी मिले हैं। उनकी जानकारी हमारे पाठकों को दें ?

प्रो० श्रीवत्स : नीरू जी मुझे वर्ष 2006 में तत्कालीन राष्ट्रपति डा०ए०पी० जे० अब्दुल कलाम द्वारा केंद्रीय हिन्दी संस्थान आगरा द्वारा बाबू गंगा शरण सिंह हिन्दी सेवी पुरस्कार दिया गया। 'त्रिप-त्रिप चेते' (डोगरी) के हिन्दी अनुवाद 'बूंद-बूंद स्मृतियां' पर केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा 2013 में पुरस्कृत किया गया, जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकैडमी द्वारा दो बार पुरस्कृत किया गया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा साहित्य महामहोपाध्याय सम्मान 2004 में, प्रेमनाथ भट्ट Ameteur Journalist award 2003, एम०ए (संस्कृत) में निरुक्त और वेद प्रश्न पत्र में प्रथम आने पर श्रीमती दयावती कौर पुरस्कार मिले हैं।

26. नीरू शर्मा : श्रीवत्स जी आप इतने वर्षों से साहित्य-सृजन से जुड़े हुए हैं। क्या यह मान लें कि आप अपनी आत्मकथा लिखेंगे ?

प्रो० श्रीवत्स : नीरू जी मैं अपनी आत्मकथा 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' शीर्षक से डोगरी में लिखने पर कार्यरत हूँ। मेरे जीवन में जितने भी उतार-चढ़ाव आए चाहे निजी या साहित्य के क्षेत्र में उन्हें कलमबंद करने के लिए स्नापसिज़ तैयार कर रहा हूँ।

27. नीरू शर्मा : प्रो० साहब नयी पीढ़ी के रचनाकारों को क्या संदेश देना चाहेंगे ?

प्रो० श्रीवत्स : नीरू जी नई पीढ़ी को मेरा यही संदेश है कि यदि वे अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को जीवित रखना चाहते हैं तो समय निकाल कर अपने साहित्य का अध्ययन अवश्य करते रहें। प्रसार भारती एवं दूरदर्शन के साथ जुड़ने का यत्न करें। जब भी किसी संस्था द्वारा कोई गोष्ठी आयोजित की जाती है उसमें अवश्य भाग लें ताकि उन्हें सीखने एवं लिखने की प्रेरणा मिलती रहे।

प्रो० सत्यपाल श्रीवत्स जी आपने अपने बहुमूल्य समय में से कुछ समय देकर अपने विचारों से अवगत कराया एवं हमारा मार्गदर्शन किया। आप का बहुत-बहुत धन्यवाद।

ooo